5
कृपाराम खिड़िया

जीवन परिचय -

कवि कृपाराम खिड़िया शाखा के चारण थे। इनके पिता का नाम जगराम जी था जो खराड़ी गाँव (वर्तमान पाली जिले में) के निवासी थे। सीकर नरेश देवीसिंह एवं उनके पुत्र राव राजा लक्ष्मण सिंह ने इनकी कवि प्रतिभा एवं विद्वत्ता से प्रभावित हो इन्हें क्रमशः महराजपुरा एवं लछमणपुरा गाँव की जागीर प्रदान की थी।

कृपाराम खिड़िया का रचनाकाल संवत् 1864 (वि.सं.) के आसपास माना जाता है। इनकी रचनाओं में 'राजिया रा सोरठा' (काव्य), चालकनेसी (नाटक) तथा एक अलंकार ग्रन्थ के नाम गिनाये जाते हैं। इनमें से 'राजिया रा सोरठा' ही वर्तमान में उपलब्ध है।

'राजिया रा सोरठा' (ग्रन्थ) कवि ने अपने सेवक राजाराम (राजिया) को संबोधित कर लिखा है। राजाराम (राजिया) कवि का विश्वासपात्र एवं सेवाभावी सेवक था। राजाराम निस्संतान था। इसलिए वह बहुत उदास रहता था कि मरणोपरान्त कोई उसका नाम लेवा भी नहीं बचेगा। तब कवि ने उसे आश्वस्त किया कि वह अपनी कविता द्वारा उसे अमर बना देंगे कि सारी दुनिया उसका नाम याद रखेगी। तब कवि ने राजिया को संबोधित कर नीति के सोरठे रचने शुरू किये। इसमें लगभग 140 सोरठे मिलते हैं।

'राजिया रा सोरठा' राजस्थानी भाषा में संबोधन नीति काव्य की प्रथम रचना मानी जाती है। इसमें डिंगल भाषा का प्रयोग हुआ है। सोरठा छंद है तथा वैण सगाई मुख्य अलंकार है। इनकी सहजता, सरलता एवं सरसता तथा प्रसादगुणयुक्तता के कारण 'राजिया रा सोरठा' लोक समाज में बहुत प्रसिद्ध है।

पाठ परिचय -

संकलित अंश में कवि ने हिम्मत एवं पराक्रम का महत्त्व, सद् संगति का लाभ, आपदा से पूर्व प्रबन्धन के महत्त्व को स्पष्ट किया है। इनमें मानव जीवन में वाणी को महत्वपूर्ण बताते हुए सोच–समझकर एवं मधुर वचन बोलने का उपदेश दिया गया है। कवि के अनुसार एक आदर्श समाज में गुणों की पूजा होनी चाहिए। इन सोरठों में कवि की विद्वत्ता, बहुज्ञता एवं अनुभव की व्यापकता प्रकट होती है।

राजिया रा सोरठा

(1) गुण अवगुण जिण गांव, सुणै न कोई सांभलै।
उण नगरी विच नांव, रोही आछी राजिया।।

(2) कारज सरै न कोय, बल प्राक्रम हिम्मत बिनां।
हलकार्यां की होय, रंगा स्याळां राजिया।।

(3) मिळे सींह वन मांह, किण मिरगां मृगपत कियौ।
जोरावर अति जांह, रहै उरध गत राजिया।।

(4) आछा जुध अणपार, धार खगां सनमुख धसै।
भोगै हुय भरतार, रसा जिके नर राजिया।।

(5) इणही सूं अवदात, कहणी सोच विचार कर।
बे मौसर री बात, रूड़ी लगै न राजिया।।

(6) पहली कियां उपाव, दव दुसमण आमय दटै।
प्रचँड हुआं विसवाव, रोभा घालै राजिया।।

(7) हीमत कीमत होय, बिना हीमत कीमत नहीं।
करै न आदर कोय, रद कागद ज्यूँ राजिया।।

(8) उपजावै अनुराग, कोयल मन हरखत करै।
कडवौ लागै काग, रसना रा गुण राजिया।।

(9) दूध नीर मिळ दोय, हेक जिसी आक्रित हुवै।
करै न न्यारौ कोय, राजहंस बिना राजिया।।

(10) मलियागिर मंझार, हर को तर चंनण हुवै।
संगत लियै सुधार, रूंखा ही नै राजिया।।

(11) पाटा पीड़ उपाव, तन लागां तरवारिया।
वहै जीभ रा घाव, रती न ओखद राजिया।।

(12) मूसा नै मंजार, हित कर बैठा हेकण।
सह जाणै संसार, रस नह रहसी राजिया।।

(13) खळ गुळ अण खूंताय, एक भाव कर आदरै।
ते नगरी हुंताय, रोही आछी राजिया।।

(14) घण घण साबळ घाय, नह फूटै पाहड़ निवड़।
जड़ कोमळ भिद जाय, राय पड़ै जद राजिया।।

(15) पय मीठा कर पाक, जो इमरत सींचीजिये।
उर कड़वाई आक, रंच न मुकै राजिया।।

कठिन शब्दार्थ

रोही	–	निर्जन वन	आछी	–	अच्छी
हलकार्या	–	ललकारना	स्याळां	–	शृंगालों को
मिरगा	–	मृग, पशु	जोरावर	–	बल, पराक्रम
जुध	–	युद्ध	खगां	–	तलवार
रसा	–	पृथ्वी	अवदात	–	हितकारी, उज्ज्वल
बे मौसर	–	बिना अवसर	रूड़ी	–	अच्छी
उपाव	–	उपाय	दव	–	जंगल
आमय	–	रोग	रोभा	–	कष्ट
घालै	–	देता है	रद	–	रद्दी
हरखत	–	हर्ष, प्रसन्नता	रसना	–	जबान, वाणी
इमरत	–	अमृत	रंच	–	जरा–सा भी
मुकै	–	कम होना	हेक	–	एक
आक्रित	–	आकृति	न्यारौ	–	अलग
मंझार	–	मध्य में	तर	–	वृक्ष
चंनण	–	चंदन वृक्ष	मूसा	–	चूहा
मंजार	–	बिल्ली	रस	–	अपनत्व, मित्रता
खळ	–	खल, भूसी	गुळ	–	गुड़
घण	–	घने	साबळ	–	हथौड़ा
धाय	–	प्रहार	भिद	–	भेदना
राय	–	दरार	उरध गत	–	उर्ध्वगति

अभ्यासार्थ प्रश्न

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. 'राजिया' का मूल नाम था –
   (क) राजा (ख) राजाराम (ग) रजिया (घ) रामदेव
2. दूध एवं जल की मिलावट को कौन अलग करता है?
   (क) कौआ (ख) कोयल (ग) तोता (घ) राजहंस

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न –

3. कवि के अनुसार किसके अभाव में कोई भी कार्य सिद्ध नहीं हो सकता है ?
4. दूध एवं नीर (जल) को कौन अलग–अलग कर सकता है?
5. कवि के अनुसार किन–किन का उपाय पहले ही कर लेना चाहिए।
6. कौनसी जगह चंदन के वृक्ष बहुतायत में पाये जाते हैं?
7. किस के घाव कभी नहीं भरते हैं?

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

8. संकलित अंश के अनुसार किस नगर में नहीं रहना चाहिए?
9. 'अस्वभाविक मित्रता के घातक परिणाम होते हैं' संकलित अंश के आधार पर स्पष्ट कीजिए।
10. 'जन्मजात प्रवृत्तियों में बदलाव असंभव है' संकलित अंश के आधार पर स्पष्ट कीजिए?

निबंधात्मक प्रश्न –

11. संकलित अंश के आधार पर हिम्मत एवं पराक्रम के महत्त्व को स्पष्ट कीजिए।
12. संकलित अंश के आधार पर वाणी के महत्त्व को स्पष्ट कीजिए।
13. निम्नलिखित पंक्तियों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए –
    (क) दूध नीर मिळ दोय, हेक जिसी आक्रित हुवै।
    करै न न्यारौ कोय, राजहंस बिना राजिया।।
    (ख) घण घण साबळ घाय, नह फूटै पाहड़ निवड़।
    जड़ कोमळ भिद जाय, राय पड़ै जद राजिया।।